‘आधे-अधूरे’ और ‘पगला घोड़ा’ नाटक का तुलनात्मक अध्ययन

सत्र : 2012-2013

एम.फिल. हिंदी (तुलनात्मक साहित्य) उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2012-2013

शोध निर्देशक

डॉ. सुनील कुमार

सहायक प्रोफेसर

शोधार्थी

मोहित मिश्रा

पंजी.सं. - 2012/02/205/007

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम -1997, क्रमांक - 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा - 442005 (महाराष्ट्र), भारत

अनुक्रमणिका

आभार

भूमिका **i-iv**

प्रथम अध्याय- मोहन राकेश और बादल सरकार का लेखकीय व्यक्तित्व **1-32**

- 1.1 रचनाकार *मोहन राकेश*
- 1.2 *मोहन राकेश* का हिंदी साहित्य में स्थान
- 1.3 *बादल सरकार* का लेखन
- 1.4 *बादल सरकार* का बांग्ला रंगमंच में योगदान

द्वितीय अध्याय- 'आधे-अधूरे' और 'पगला घोड़ा' की मूल संवेदना **33-80**

- 2.1 अस्तित्व की खोज करते पात्र
- 2.2 स्त्री-पुरुष सम्बन्ध
- 2.2 मनोवैज्ञानिक पहलू
- 2.4 मध्यवर्गीय परिप्रेक्ष्य

तृतीय अध्याय- 'आधे-अधूरे' और 'पगला घोड़ा' की रंग-चेतना और उनका नाट्य-सौन्दर्य **81-113**

- 3.1 रंगमंचीय वैशिष्ट्य
- 3.2 रंग-भाषा
- 3.3 नाट्य-सौन्दर्य

उपसंहार **114-121**

परिशिष्ट **122-123**

ग्रंथानुक्रमणिका **124-129**

भूमिका

आधुनिक युग विज्ञान का युग है। इस वैज्ञानिक युग में शोध कार्यों का अपना एक अलग महत्व है। विज्ञान एवं शोध मानव सभ्यता के प्रगति रूपी रथ के दो पहिए कहे जा सकते हैं। हिंदी तुलनात्मक साहित्य का शोधार्थी होने के कारण मेरे शोध का विषय ऐसा होना था जो पूर्णरूप में तुलनात्मक हो, साथ ही साहित्य से भी जुड़ा हो। *दिल्ली विश्वविद्यालय* में अपनी स्नातकोत्तर की पढ़ाई करते समय मैंने अंतिम सत्र में विशेष अध्ययन के लिए रंगमंच का चुनाव किया था। जिसमें मुझे *विजय तेंदुलकर, बादल सरकार* आदि कुछ नाटककारों के नाटकों को पढ़ने का अवसर मिला। वे नाटककार हिंदी भाषी नहीं थे परंतु उनके नाटकों में समकालीन समस्याओं का चित्रण मिलता है। *बादल सरकार* बांग्ला के एक प्रमुख नाटककार हैं, जिन्होंने 50 से अधिक नाटकों की रचना की है। हिन्दी साहित्य के नाटककारों में *मोहन राकेश* और बांग्ला नाटककारों में *बादल सरकार* का स्थान अद्वितीय है। *मोहन राकेश* ने हिन्दी नाटकों को नई दिशा दी, वहीं बादल सरकार ने बांग्ला के नाटकों को आम आदमी तक पहुँचाया है। बादल सरकार ने नाटकों को कम खर्चीला बनाकर इसके प्रदर्शनों को सामान्य स्थान और परिवेश में खेलने वाला बनाया है। मेरा *बादल सरकार* के नाटक का चुनाव करने का कारण है कि एक रचनाकार के रूप में *बादल सरकार* के नाटकों पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया, लेकिन उनके *तीसरे रंगमंच* पर विचार होता रहा है। *पगला घोड़ा* नाटक में पुरुष की कर्तव्यविमुखता और अपने जीवन के निर्णय दूसरों पर सौंप देने की विवशता को चित्रित किया गया है। *मोहन राकेश* हिंदी नाट्य रचना को एक नया मोड़ देने वाले नाटककार हैं। उन्होंने ज्यादा नाटक नहीं लिखे, लेकिन जो लिखे वे नाटक मील का पत्थर साबित हुए हैं। *मोहन राकेश* के नाटक पढ़ने पर दो प्रकार का आभास होता है। प्रारम्भिक दौर में उन्होंने ऐतिहासिक नाटक के द्वारा आधुनिक जीवन की समस्या को प्रस्तुत किया गया। दूसरे दौर में सामान्य पात्रों को लेकर वे *आधे-अधूरे* तक आते हैं। वे आधुनिक और समसामयिक समस्या को नाटक के माध्यम से उठाते हैं। नाटक में पारिवारिक संबंधों की टकराहट और अपने कर्तव्य के विमुख होते पात्रों का सजीव चित्रण *मोहन राकेश* ने *आधे-अधूरे* नाटक में किया है।

इस प्रकार ये दोनों ही नाटक अपने आप में कई विशेषताओं को समेटे हुए हैं। इन दोनों नाटकों के तुलनात्मक अध्ययन हिंदी और बांग्ला के समाज को गहराई से जानने-समझने का अवसर मिलेगा। इसी उद्देश्य से मैंने अपने एम. फिल. के लघु शोध-प्रबंध के लिए **‘आधे-अधूरे’ और ‘पगला घोड़ा’ का तुलनात्मक अध्ययन** विषय को चुना।

आधे-अधूरे और *पगला घोड़ा* नाटक समकालीन ज़िन्दगी और पारस्परिक सम्बन्धों का पहला हिंदी और बांग्ला नाटक है। इस लिहाज से प्रस्तुत शोध कार्य की जिज्ञासा काफी हद तक नवीन है। *आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* में व्यक्त मध्य वर्ग के व्यक्ति के अंतर्विरोध और समाज के दबावों में आज के जीवन में आने वाले परिवर्तनों की पड़ताल होती है| हिंदी में जहाँ *मोहन राकेश* ने आम आदमी को केंद्र में रखकर अपने नाटकों की रचना की, तो वहीं इस परंपरा का निर्वाह बांग्ला में *बादल सरकार* ने किया। दोनों नाटकों के माध्यम से बांग्ला और हिंदी की सांस्कृतिक समानताओं को जानने-समझने का प्रयास किया जाएगा। नाटककारों के द्वारा लिखे गए नाटकों की समानता को समझते हुए सामाजिक बनावट को जानने का अवसर प्राप्त होगा।

नाटककार *बादल सरकार* का मूल्यांकन अभी तक ठीक से नहीं हो पाया, जबकि उनके द्वारा दिए गए *तीसरे रंगमंच* के सिद्धांत पर विचार किया गया है। इसलिए यहाँ *तीसरे रंगमंच* से ज्यादा महत्वपूर्ण मानकर *बादल सरकार* के रचनाक्रम को ध्यान में रखते हुए विषय का चुनाव किया गया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में कुल तीन अध्याय हैं। पहला अध्याय ***मोहन राकेश और बादल सरकार का* लेखकीय व्यक्तित्व** प्रस्तुत शोध विषय का पहला पड़ाव है। इसमें कुल चार उप-अध्याय हैं। पहले उप-अध्याय (*रचनाकार मोहन राकेश*) में रचनाकार के व्यक्तित्व को समझने का प्रयास किया गया है। *मोहन राकेश* अपने जीवन में जिस बिखराव को जीते हैं वैसा ही बिखराव उनकी रचना के पात्रों के जीवन में प्रतिबिंबित होता है। दूसरे उप अध्याय (*मोहन राकेश का हिंदी साहित्य में स्थान*) के माध्यम से हिंदी साहित्य में *मोहन राकेश* के योगदान का विश्लेषण किया गया है। *मोहन राकेश* सभी विधाओं में रचना करने वाले हिंदी के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। तीसरे उप अध्याय (*बादल सरकार का लेखन*) के अंतर्गत *बादल सरकार* के लेखन के विविध आयामों को समझने का प्रयास किया है। वे लेखन के माध्यम से सामाजिक समस्याओं को उजागर करने का कार्य करते हैं, जिसका आकलन किया गया है। चौथे उप अध्याय (*बादल सरकार का बांग्ला रंगमंच में योगदान*) के द्वारा बांग्ला रंगमंच में इनके योगदान की पड़ताल की गई है। उन्होंने *तीसरे रंगमंच* के रूप में नाट्य-सिद्धांत दिया, जो बहुत ही चर्चित हुआ है।

दूसरा अध्याय ***आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* की मूल संवेदना** है। इसमें कुल चार उप अध्याय हैं। पहले उप अध्याय (*अस्तित्व की खोज करते पात्र*) के अंतर्गत नाटक में चित्रित पात्रों के द्वारा अस्तित्व की खोज पर विचार किया गया है। आधुनिक समाज में घटते मूल्य और अस्तित्व के लिए पात्रों की छटपटाहट को समझने का प्रयास किया गया है। दूसरे उप अध्याय (*स्त्री-पुरुष सम्बन्ध*) के माध्यम से स्त्री-पुरुष के बीच के तनाव के मूल कारणों को जानने का प्रयास किया गया है। पात्र अपने-

अपने जीवन को बोझ की तरह ढोते जा रहे हैं। समाज, परिवार, आपसी संबंधों के कारण जीवन में एक निराशा का भाव बना हुआ है, जिसके कारणों को समझने का कार्य किया गया है। तीसरे उप अध्याय *(मनोवैज्ञानिक पहलू)* के अंतर्गत मनुष्य में बढ़ते मनोवैज्ञानिक विकार को जानने का कार्य किया गया है। मनोवैज्ञानिक स्तर पर मनुष्य में बदलाव हो जाते हैं। जिसके कारण जीवन में कुंठा, हताशा, निराशा, द्वंद्व अपनी जगह बना लेते हैं, जिसके कारणों पर विचार किया गया है। चौथे उप अध्याय (*मध्यवर्गीय परिप्रेक्ष्य*) में आजादी के बाद शहरों में जो मध्य वर्ग बहुत तेजी से बनने के कारणों को समझने का कार्य किया गया है। जिसकी इच्छाएँ अधिक हैं, परंतु वह अपनी परंपराओं, रूढ़ियों, सामाजिक सरोकारों से दूर नहीं हो पाता है। मध्यवर्गीय समाज में स्त्री व पुरुष के संबंधों में आए बदलाव से जो स्थितियाँ उभरकर सामने आई हैं। *आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* में चित्रित पात्रों के माध्यम से उन परिस्थितियों को विस्तृत रूप से समझने का प्रयास इस उप अध्याय में किया गया है।

तीसरा अध्याय ***आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* की रंग-चेतना और उनका नाट्य-सौन्दर्य** है। इस अध्याय में कुल तीन उप अध्याय हैं। यह पूरा अध्याय रंगमंच की तकनीक पर आधारित है। इस अध्याय के अंतर्गत नाटक की प्रस्तुति को भी शोध में शामिल किया गया है, जिससे नाटक के मूलपाठ के साथ-साथ उसके मंचीय आयामों को भी समझा जा सके। पहले उप अध्याय *(रंगमंचीय वैशिष्ट्य)* के माध्यम से नाटक की प्रस्तुति पर भी विचार किया गया है क्योंकि नाटक का मंचित होना उसकी पहली शर्त है। नाटक जब तक मंच पर नहीं प्रस्तुत होता तब तक उसका कोई महत्व नहीं होता। इसलिए नाटक को मंच पर प्रस्तुत करने में सहायक तत्वों को *आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* में देखने का प्रयास किया गया है। दूसरे उप अध्याय *(रंग-भाषा)* में रंग भाषा के माध्यम से मंच-सज्जा या दृश्यबंध, वेशभूषा, रूप-सज्जा, रंग-संगीत और प्रकाश व्यवस्था को निर्देश दिया जाता है। इस आधार पर *आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* नाटक को समझने का प्रयास किया गया है। तीसरे उप अध्याय (*नाट्य-सौन्दर्य*) में नाटक के अंक विभाजन, दृश्य-बंध, अंतर्द्वंद्व को दिखाया गया है। इसके साथ ही बादल सरकार और *मोहन राकेश* के नाटक के अंक और दृश्य-बंध पर विचार किया गया है।

परिशिष्ट में *मोहन राकेश* और *बादल बादल सरकार* के नाटक *आधे-अधूरे* तथा *पगला घोड़ा* की प्रस्तुति के चित्र दिए गए हैं। साथ ही दोनों रचनाकारों के चित्र भी संकलित किए गए हैं।

मोहित मिश्रा

उपसंहार

आजादी के बाद होने वाले सामाजिक और राजनीतिक बदलावों के कारण मनुष्य के जीवन और उसके व्यक्तित्व में तमाम तरह के परिवर्तन होने लगे। परिवार, विवाह और संबंधों में भी बहुत तेजी से बदलाव होने लगा। परिवार नामक संस्था टूटने लगी, जिसके कारण मनुष्य के जीवन-जगत में बिखराव की स्थिति पैदा हो गई। इसका व्यापक प्रभाव साहित्य पर भी देखने को मिलता है। *मोहन राकेश* हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ रचनाकार हैं, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज की विसंगतियों को चित्रित किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं को जीवन के अनुभवों से प्रेरित होकर लिखा है। *मोहन राकेश* की रचना प्रक्रिया अत्यंत प्रभावी है। वह बचपन से ही रचनाकर्म से जुड़े हुए थे। *मोहन राकेश* ने साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई, जिसमें उन्होंने मानवीय मूल्य, सामाजिक परिवेश, आर्थिक विपन्नता, संबंधों की टकराहट आदि का वर्णन किया है।

मोहन राकेश ने साहित्य में कहानियां, उपन्यास, एकांकी, नाटक आदि सभी विधाओं में अपना योगदान दिया। वे जिस विधा में रचना करते हैं, उसमें उनकी रचना महत्वपूर्ण योगदान के रूप में स्थापित हो जाती है। *मोहन राकेश* ने विभाजन की त्रासदी से लेकर पारिवारिक बिखराव तक का वर्णन अपनी रचनाओं में किया है। उन्होंने *मलबे का मालिक, अँधेरे बंद कमरे, अंतराल, न आने वाला कल, आषाढ़ का एक दिन* और *आधे-अधूरे* आदि रचनाओं के माध्यम से औद्योगिकीकरण, बदलते हुए परिवेश, भ्रष्ट व्यवस्था, महानगरीय जीवन और यांत्रिक सभ्यता के परिणाम से स्वरूप जीवन में आए तनाव, विश्रृंखलता, अकेलापन एवं निराशा को दिखाया है। कुंठा, संत्रास एवं असुरक्षा की भावना ने समाज को त्रस्त कर दिया है। *मोहन राकेश* ने अपनी रचनाओं में इन सारी समस्याओं को उठाया है। *मोहन राकेश* ने हिंदी साहित्य को आधुनिक परिवेश के साथ जोड़ने का कार्य किया है।

बादल सरकार बांग्ला नाट्यकर्म के एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर हैं। उन्होंने अपने जीवन के प्रारम्भिक काल से ही खुद को नाट्य मंचन से जोड़ लिया था। साहित्य और नाटकों से *बादल सरकार* का लगाव बचपन से ही देखने को मिलता है। वे पाश्चात्य रंगमंच से प्रभावित थे। उन्होंने *तीसरे रंगमंच* (नाट्य-सिद्धांत) की रचना की। भारतीय समाज को ध्यान में रखते हुए बादल सरकार ने नाटक को आम आदमी से जोड़ने का काम किया। आधुनिक भारतीय नाट्य परंपरा में बादल सरकार के अलावा अन्य कोई नाट्य-सिद्धांत की रचना करने वाला नाटककार नहीं है। उन्होंने अपने अनुभवों के माध्यम से बांग्ला नाट्य परंपरा को एक दिशा प्रदान की, जिससे वह समृद्ध बनती है। *बादल सरकार* ने जो

नाटक लिखे, वे बांग्ला सांस्कृतिक प्रभाव को दिखाते हैं। उन्होंने नाटकों में जीवन के अनुभवों को व्यक्त करने का कार्य किया। *बादल सरकार* और उनके रंगदल *शताब्दी* ने *मुक्त तीसरे रंगमंच* को लेकर लंबे समय से चल रहे विचार-विमर्श को और इससे संबंधित कार्य-शिविरों को एक मंजिल तक पहुँचाने में कामयाबी हासिल की। *तीसरे रंगमंच* ने रंगकर्म के लिए अनिवार्य समझी जाने वाली सीमाओं को तोड़कर मंच से, सभागार से, प्रकाश व्यवस्था, मंच-सज्जा, उपकरणों और इनमें होने वाले खर्च से अपने को मुक्त कर लिया। यह ऐसा रंगमंच था, जिसे कहीं भी, कभी भी ले जाया जा सकता था। तीसरे रंगमंच का प्रचार-प्रसार भारतवर्ष में अलग-अलग रंगकर्मियों के द्वारा किया गया। स्थानीय समस्या पर आधारित नाटक की रचना करके उसकी प्रस्तुति के लिए *तीसरे रंगमंच* का प्रयोग किया जाने लगा। *बादल सरकार* का *तीसरा रंगमंच* हिंदी रंगमंच के लिए भी एक उपलब्धि है। इसके द्वारा उन्होंने भारतीय नाट्य परंपरा को आम जन से जोड़ने का काम किया।।

मोहन राकेश और *बादल सरकार* दोनों नाटककार एक ही समय के रचनाकार हैं। उन्होंने अपने सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखकर नाट्य रचना की। *मोहन राकेश* ने आधुनिक मानव के जीवन की त्रासदी का वर्णन किया है। *मोहन राकेश* जब नाट्य रचना करते हैं तो उस समय भारतीय साहित्य में कई बदलाव हो रहे थे। जिनका प्रभाव उनकी रचनाओं में देखने को मिलता है। *बादल सरकार* अपनी रचनाओं को समाज से जोड़ते हुए परंपराओं का खंडन करते हैं। *आधे-अधूरे* नाटक तक आते-आते *मोहन राकेश* दो नाटकों की रचना कर चुके थे। जिसमें ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य को चित्रित करते हुए आधुनिक मानव की समस्याओं को दिखाया गया है।

हिन्दी साहित्य पर अस्तित्ववादी प्रभाव दूसरे विश्वयुद्ध के बाद पड़ता है। कविता, कहानी तथा उपन्यास में मनुष्य की विसंगत स्थिति, महानगरों की भीड़ तथा पारिवारिक संबंधों में मनुष्य के अकेलेपन, अजनबीपन तथा संत्रास का वर्णन किया गया है। *अज्ञेय* का उपन्यास *अपने अपने अजनबी* *धर्मवीर भारती* का नाटक *अंधायुग* तथा *मोहन राकेश* का नाटक *आधे-अधूरे* व बांग्ला के नाटककार *बादल सरकार* भी *पगला घोड़ा* नाटक में मानव के अस्तित्व पर चिंतन करते हुए प्रतीत होते हैं। *मोहन राकेश* ने व्यक्ति के अस्तित्व को विमर्श के केंद्र में रखते हुए *आधे-अधूरे* नाटक की रचना की है। इस नाटक के प्रारंभ से ही *मोहन राकेश* व्यक्ति की अपने अस्तित्व के प्रति छटपटहाट का चित्र उपस्थित करते हैं। व्यक्ति का अपना अस्तित्व होना आधुनिक समाज में अत्यंत आवश्यक है। आज की परिस्थिति बदल गई है। इसमें मानवीय मूल्यों के स्थान पर आर्थिक स्थिति का महत्व ज्यादा हो गया है। समाज में व्यक्ति की प्रतिष्ठा के लिए उसकी आर्थिक स्थिति का मजबूत होना आवश्यक है। उसको अपने परिवार में भी अस्तित्व की खोज करनी पड़ती है। महेंद्रनाथ को अपने परिवार में जो उपेक्षा

मिलती है, उससे वह अपने अस्तित्व के लिए चिंतित होता है। महेंद्रनाथ को अपनी हैसियत जानने की तीव्र इच्छा है। जिसके लिए *मोहन राकेश* ने अपने नाटकों में आधा-अधूरापन तो खोज निकाला, पर पूर्णता की तलाश के लिए आकुलता उस अनुपात में नहीं दिखाई। *बादल सरकार* के नाटक में पात्र अपने जीवन, मृत्यु, अस्तित्व एवं अस्मिता आदि प्रमुख सवालों से जूझते नजर आते हैं। *पगला घोड़ा* नाटक में जीवन के प्रति सकारात्मकता दिखाकर *बादल सरकार* मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं। *बादल सरकार* भी लड़की के अस्तित्व के लिए उसके असंतोष को व्यक्त करते हैं। उन्होंने लड़की को अपने जीवन को सार्थक करने की लालसा से प्रेरित दिखाया है, क्योंकि स्त्री का अस्तित्व जीवन भर संकट में ही बना रहता है। पारंपरिक समाज में स्त्री का अस्तित्व उसके पति से ही जुड़ा होता है। सती प्रथा इसका जवलंत उदाहरण है। जिसमें पति की मृत्यु के बाद पत्नी (स्त्री) का कोई अस्तित्व या कोई महत्व नहीं रह जाता था। उसे भी पति के साथ स्वयं का जीवन समाप्त करना पड़ता था।

आधुनिक जीवन में स्त्री पुरुष के पारस्परिक संबंधों की परिणति आधुनिक नाटकों की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। यद्यपि नारी-जागरण की प्रक्रिया बहुत पहले से ही आरंभ हो गई थी किन्तु उसका वास्तविक प्रतिफलन स्वतंत्रता के पश्चात ही हुआ। *मोहन राकेश* और *बादल सरकार* दोनों नाटककारों ने समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष संबंधों की कड़वाहट को अपने नाटक में स्थान दिया है। ऐसे में स्त्रीवादी साहित्य का प्रभाव भारतीय साहित्य पर पड़ना लाज़मी था, जिसके लिए प्रबल विरोध हो रहे थे। स्त्री की आवाज उठाने का प्रयास किया जा रहा था। दोनों नाटककारों ने स्त्री की स्थिति को सुधारने के लिए उसके मुखर स्वरूप को चित्रित किया है। दोनों नाटकों में पुरुष की स्थिति को कमजोर दिखाया जाता है। वहीं स्त्री अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती नजर आती है, लेकिन पुरुष सामाजिक बंधनों से मुक्त नहीं हो पाता। उसकी इच्छा सामाजिक दबावों, परंपराओं से विरोध करने की नहीं होती। पति-पत्नी, प्रेमी-प्रेमिका, और भाई-बहन आदि संबंधों में कड़वाहट का कारण आर्थिक स्थिति है। जिसके प्रभाव से व्यक्ति के मन में विकार उत्पन्न होने लगता है। पति-पत्नी दोनों एक दूसरे के साथ होने पर भी अपने लाभ के बारे में सोचते हैं। *आधे-अधूरे* नाटक में सावित्री को मुखर रूप में प्रस्तुत किया गया है तो महेंद्रनाथ एक दब्बू किस्म का व्यक्ति है। उसे अपनी जिम्मेदारियों का अहसास नहीं रहता। स्त्री-पुरुष के संबंधों में जो कड़वाहट आ गई है उसके कारण परिवार टूटते जा रहे हैं। इस टूट-फुट के बीच सभी अतृप्त और असंतुष्ट बने रहते हैं।

बादल सरकार ने अपने नाटक में बांग्ला संस्कृति का चित्रण किया है जहाँ पुरुष आधुनिक होने पर भी अपने प्रेम या अपने अधिकारों के लिए परंपराओं से विरोध नहीं करता है। पुरुष विद्रोह करने की बात करता तो है परंतु वह विरोध करने से डरता है। उन्हें परंपराओं के बंधनों ने जकड़ रखा

है। बांग्ला के पुरुष वर्ग में स्त्री के प्रति कोई संवेदनशीलता नहीं है। *बादल सरकार* ने *पगला घोड़ा* के माध्यम से दिखाया है कि किस प्रकार हिमाद्रि, कार्तिक और सातू अपने कर्तव्यों से पीछे हट जाते हैं। स्त्री-पुरुष का प्रेम मानव जीवन की अत्यंत महत्वपूर्ण कोमल, करुण व्यक्तिगत भावना है। जिसके लिए सभी को अपना निर्णय लेने का अधिकार मिला है। नाटक में मध्यवर्गीय चरित्रों की निःस्वार्थ जीवन के प्रति उदासीन भावना को व्यक्त किया गया है। आधुनिक समाज में तेजी से व्यवस्था बदल रही है जिसमें न कोई टिकाऊ मूल्य रह गया है, न कोई धार्मिक आस्था, न कोई राजनीतिक विश्वास, न कोई वैयक्तिक या सामाजिक विवेक। सभी कुछ काम चलाऊ है और समाज बिखर रहा है, घर टूट रहे हैं।

दोनों नाटकों में मनोवैज्ञानिक दृष्टि का प्रयोग हुआ है, जो पात्रों के माध्यम से दिखाई देता है। सामाजिक बंधनों को नाटकों में दिखाया गया है, जिसके चलते मनुष्य का जीवन अवसाद, पीड़ा, कुंठा और अकेलेपन में खो जाने के लिए विवश होता है। *पगला घोड़ा* और *आधे-अधूरे* नाटक में पात्र अपने जीवन की घटनाओं के कारण मानसिक दबाव में चले जाते हैं। *मोहन राकेश* और *बादल सरकार* ने अपने नाटकों में पात्रों के माध्यम से समाज की मानसिकता का चित्रण किया है। *मोहन राकेश* ने *आधे-अधूरे* नाटक में सभी पात्रों को मानसिक ग्रंथियों से पीड़ित दिखाया है। महेंद्रनाथ, बिन्नी, किन्नी और अशोक सभी किसी न किसी मनोग्रंथि से ग्रस्त हैं। जीवन की लालसा पूर्ण न होने से उनमें अवसाद की स्थिति उत्पन्न हो गई है। बादल सरकार के पात्र भी अपनी-अपनी ग्रंथियों से पीड़ित नजर आते हैं। हिमाद्रि, कार्तिक और सातू में अपने प्रेम को ठुकराए जाने के कारण अपने-आप को दोषी मानने की भावना बनी हुई है। सभी पात्र मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित हैं। वे अपने-अपने परिवारों से कटे हुए हैं। इसके कारण सभी अंतर्द्वंद्व से गुजर रहे हैं। *बादल सरकार* का *पगला घोड़ा* मनोवैज्ञानिक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण नाटक है। इसमें सामाजिक परिस्थितियों के कारण व्यक्ति में होने वाले बदलाव को दिखाया गया है। नाटक में बंगाली समाज के व्यक्ति की भावुक मानसिकता और पलायनवादी प्रवृत्ति के विविध रूपों की त्रासदी देखने को मिलती है। मनुष्य अपने *आधे-अधूरे* जीवन को पूरा करने, उसे सार्थक बनाने के लिए जो प्रयास करता है, उसमें होने वाली असफलताओं के कारण वह अवसाद से घिर जाता है। सामाजिक बंधनों के चलते भी कभी-कभी मनुष्य मनोवैज्ञानिक स्तर पर प्रभावित होता चला जाता है। नाटक के पात्र अपने जीवन में प्रेम को नहीं पाने के कारण कटुता, अकेलेपन, सामाजिक व्यवहार से दूर-दूर नजर आते हैं। पुरुष मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित होने पर स्वयं को अभावग्रस्त और दुखी महसूस करने लगते हैं।

आधुनिक नाटकों में मध्यवर्गीय समाज को चित्रित किया गया है। मध्य वर्ग की विडंबना यह है कि वह अपने व्यक्तित्व का विकास करने के लिए आगे बढ़ना चाहता है। लेकिन परंपरा, सामाजिक बंधनों, पारिवारिक दायित्व के चलते आगे बढ़ने में सफल नहीं हो पाता। बंधनों में जकड़े होने के कारण उसे अपनी परिस्थितियों के सामने हमेशा दबना पड़ता है। *आधे-अधूरे* और *पगला घोड़ा* दोनों नाटक आज के मध्यवर्गीय समाज को चित्रित करते हैं। दोनों नाटक मध्यवर्गीय जीवन के तनाव को उजागर करने का सफल प्रयास करते हैं। मध्यवर्गीय परिवार के सदस्यों के बीच संबंधों में जो कटुता व दुराव आ रहा है, उसको *आधे-अधूरे* नाटक में चित्रित किया गया है। जिसमें मध्यवर्गीय स्तर से ढहकर निम्न मध्यवर्गीय स्तर पर आए हुए शहरी परिवार का कड़वाहट भरा जीवन दिखता है। विडंबना यह है कि व्यक्ति स्वयं अधूरा होते हुए भी दूसरों के अधूरेपन को सहना नहीं चाहता और काल्पनिक संपूर्णता की तलाश में भटककर अपनी और दूसरों की ज़िंदगी को नरक बना देता है। *मोहन राकेश* ने *आधे-अधूरे* नाटक में सावित्री को एक मध्यवर्गीय नौकरीपेशा स्त्री के रूप में चित्रित किया है। सावित्री निम्न-मध्यवर्ग से उच्च-मध्यवर्ग में शामिल होने की इच्छा रखती है। इस नाटक में मध्यवर्गीय परिवार की नारी के जीवन की महत्वाकांक्षा और उसके सामाजिक बंधनोंका दृश्य प्रस्तुत किया गया है।

मोहन राकेश और *बादल सरकार* के नाटकों के केंद्र में मध्य वर्ग है। *आधे-अधूरे* के पात्र सामान्य हैं, जिनके जीवन में आर्थिक तनाव के कारण कटुता आ गई है। यह परिवार मध्यवर्गीय से निम्न मध्यवर्गीय स्थिति में पहुँच गया है। परिवार की आर्थिक आवश्यकता की पूर्ति सावित्री की नौकरी से होती है। महेंद्रनाथ व्यापार में असफल होने के कारण निराश हो चुका है। अब वह कोई प्रयास भी नहीं करता है। अशोक सावित्री की नौकरी लगवाने के प्रयास को भी संदेह की नजर से देखता है। पूरा दिन घूमता रहता है परंतु सपने बड़े-बड़े देखता है। इस परिवार की स्थिति निम्न स्तरीय होती जा रही है। आर्थिक स्थिति के कारण पारिवारिक वातावरण में आने वाले तनाव परत-दर-परत खुलते जाते हैं। बादल सरकार ने नाटक में मध्यवर्गीय समाज की नौकरी, सामाजिक बंधन और पारिवारिक उलझनों से तनाव आदि के माध्यम से संबंधों में होने वाले बदलाव को दिखाया है। सातू लक्ष्मी से शादी करने की इच्छा रखते हुए भी उससे शादी नहीं करता, क्योंकि उसको समाज का डर था। हिमाद्रि मिलि को अपने मध्यवर्गीय जीवनयापन के कारण छोड़ देता है। वह जानता था कि मिलि की जीवन शैली और उसकी जीवन शैली में जमीन-आसमान का फर्क है। इसलिए स्वयं उसे छोड़कर चला जाता है। दोनों नाटकों में मध्य वर्ग की त्रासदी का चित्रण है।

रंगमंच अभिव्यक्तिका एक जीवंत माध्यम है जो सूक्ष्म, संवेदनशील तथा गहन अनुभूतियों पर आधारित रहता है। *बादल सरकार* का नाटक मंचन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस नाटक में रंग-निर्देश

जीवंत प्रस्तुति करने में सहायक होते हैं। *मोहन राकेश* एक साहित्यकार होने के कारण नाट्य-मंचन के साथ उसके भाषिक पक्ष पर भी ज़ोर देते हैं। उन्होंने नाटक में संवाद, मौन, शब्द और प्रवाह के माध्यम से नाटक के मंचन को प्रभावी बनाने का कार्य किया है। *बादल सरकार* नाट्य-प्रयोक्ता थे जिसके कारण उनके नाटक में रंगमंचीय प्रवृत्तियाँ स्पष्ट देखने को मिलती हैं। वे नाटककार, निर्देशक, अभिनेता सभी भूमिकाओं में नाटक को प्रस्तुत करते हैं। *बादल सरकार* नाटक को सामान्य स्थिति में प्रस्तुत करने का निर्देश देते हैं। उन्हें ध्वनि, प्रकाश आदि के लिए नाटकों में अधिक स्थान नहीं दिखता। *मोहन राकेश* ने *आधे-अधूरे* नाटक को सामान्य रंग-संकेतों के साथ प्रस्तुत किया है, जिसके कारण नाटक को सामान्य तौर पर खेला जा सकता है। *मोहन राकेश* ने नाट्य-प्रस्तुति को प्रभावी बनाने के लिए संगीत और प्रकाश का प्रयोग किया है। दोनों नाटककारों के नाटकों की विशेषता रंगमंचीय वैशिष्ट्य है। रंगमंच पर प्रस्तुत करने के लिए इस नाटक में मंच-सज्जा या किसी उपकरण की आवश्यकता नहीं है। प्रस्तुति के लिए पात्रों की उपस्थिति प्रतीकात्मक शिल्प विधान पर निर्भर करती है। वस्तुतः रंगमंच की दृष्टि से यह नाटक एक उपलब्धि है, जिसे बिना किसी उपकरण के भी मंचित किया जा सकता है। नाटक की प्रस्तुति में *बादल सरकार* के दृश्य अत्यंत प्रभावी होते हैं। उन्होंने नाटक में स्पष्ट रंग-निर्देश दिए हैं।

मोहन राकेश ने अपने नाटकों में ध्वनि-व्यवस्था, प्रकाश-व्यवस्था, वेश-भूषा आदि के प्रयोग के लिए स्पष्ट निर्देश दिया है। *बादल सरकार* ने रंगमंच पर रंग-संकेतों के माध्यम से जीवन को चित्रित किया है। समाज और व्यक्ति की परिस्थिति को सरलता के साथ पात्रों के माध्यम से मंचित करने के लिए *बादल सरकार* सामान्य साधनों का प्रयोग करते हैं। उन्होंने पार्श्व-संगीत, प्रकाश व्यवस्था, मंच-उपकरण और वेश-भूषा आदि को नाटकों के मंचन के लिए महत्वपूर्ण नहीं माना, जिसे लंबे विकासक्रम में नाटक ने अपने से जोड़कर सम्पन्न या धनी किया है। दोनों नाटकों में एक ही पात्र के द्वारा चार पात्रों के अभिनय का संकेत बहुत ही सावधानी के साथ दिया गया है। इससे इन नाटकों में कहीं भी पात्र के उपस्थित होने में बाधा उत्पन्न नहीं होती। नाटकों की पारंपरिक बनावट को तोड़कर नए-नए प्रयोग देखने को मिलते हैं। मंच पर आग जलाने का निर्देश भी एक नवीन प्रयोग है। रंगभाषा के माध्यम से एक दृश्य निर्मित हो जाता है। समाज के तनाव, कुंठा, स्वार्थ, पारिवारिक संबंधों का द्वंद्व रंगभाषा के द्वारा मंच पर प्रस्तुत करने में दोनों नाटककार सफल होते हैं। दोनों नाटकों में समानता है कि दोनों ही रंगभाषा के माध्यम से दर्शकों के सामने एक जीवंत दृश्य बना देते हैं। *बादल सरकार* लड़की को रंगभाषा के माध्यम से कमजोर बनाकर प्रस्तुत करते हैं किन्तु *मोहन राकेश* स्त्री को नाटक में रंगभाषा के द्वारा मुखर बनाकर प्रस्तुत करते हैं। पुरुष के जीवन में स्वार्थ को दिखाने के लिए भी रंगभाषा का प्रयोग किया गया है।

दोनों नाटकों की तुलना करने से ज्ञात होता है कि रंगमंच पर अभिनय और सामाजिक स्थितियाँ एक जैसी बनी हुई हैं। नाटककार के लिए नाटक का सफल मंचन होना बहुत आवश्यक होता है। मंचन ही नाटक की उपलब्धि होती है। दोनों नाटकों में एक प्रकार का प्रवाह देखा जा सकता है। *पगला घोड़ा* में पुरुष का अपने प्रेम को पाने के लिए प्रयास नहीं करना और स्त्री पात्रों का आत्महत्या कर लेना दिखाया गया है। आज का पुरुष अपने व्यापार, समाज, परंपरा में जकड़कर अपनी जिम्मेदारियों से पीछे हट जाता है। आधुनिक समाज में स्त्री ने अपने अधिकारों की माँग करना शुरू कर दिया है जिसके कारण पुरुष प्रधान समाज में हलचल मच गई है। पुरुष अपनी सत्ता को छोड़ना नहीं चाहता, जिससे स्त्री को अपने अधिकार के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। बादल सरकार ने नाटक में दिखाया है कि कैसे एक पुरुष अपना दबदबा बनाए रखने के लिए स्त्री को अपने अनुरूप ढालना चाहता है। पुरुष के अनुरूप ढलने पर भी स्त्री को उसका साथ नहीं मिलता। इस नाटक मेंनारी पात्र की योजना अत्यंत जीवंत दिखाई देती है। पुरुषों की स्थिति स्त्री पात्रों की तुलना में सामान्य और कमजोर है। नारी पात्र की योजना के माध्यम से बादल सरकार प्रश्न उठाते हैं, जिसे उनकी आधुनिक जीवन दृष्टि का नाम दिया जा सकता है।

नाटक के माध्यम से समाज का एक चित्र दर्शकों के सामने उभर जाता है। जिससे उनके मन में हलचल होने लगती है। दर्शक के मन में नाटककार ने बिंबों की सजीव स्थिति का निर्माण करने का कार्य किया है। रंगभाषा का प्रयोग इन नाटकों में बखूबी दिखता है जो आधुनिक और जीवंत है। ये दोनों नाटक स्त्री विमर्श, अस्तित्व अन्वेषण, पारिवारिक संबंधों, बांग्ला के साथ ही अन्य मध्यवर्गीय समाज के चित्रण के साथ भारतीय साहित्य में अपना अलग एवं विशिष्ट स्थान सुरक्षित करते हैं। इन नाटकों की रचना से *मोहन राकेश* और *बादल सरकार* दोनों कालजयी रचनाकार की श्रेणी में स्थापित होते हैं।